8

विश्वास की प्रकृति

(अध्याय 11)

जिन लोगों के नाम इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी उनके सामने आत्मिक जीवन की खतरनाक चुनौती थी, क्योंकि वे परमेश्वर से भटक जाने के गम्भीर खतरे में थे। अध्याय 10 के अन्तिम भाग में लेखक ने अपने पाठकों को भटक जाने की दशा में (10:26-31) चुनौती देते और यह कहकर प्रोत्साहित करते हुए कि उसका सचमुच में विश्वास है कि वे बने रहेंगे, इस चुनौती का सीधे सामना किया। फिर उसने अपने पत्र के उस भाग को इन शब्दों के साथ समाप्त किया: ''पर हम हटने वाले नहीं, कि नाश हो जाएं पर विश्वास करने वाले हैं, कि प्राणों को बचाएं'' (10:39)।

भटक जाने अर्थात यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे अनन्त काल तक उद्धार पाएंगे इन मसीही लोगों को क्या करना आवश्यक था? विश्वास! विश्वास हमें भी विश्वास से फिर जाने अर्थात बेदीन होने से बचने के लिए आवश्यक है।

यह कह लेने के बाद कि विश्वास अन्ततः मसीही व्यक्ति के उद्धार की कुंजी है, लेखक ने दिखाया कि ''विश्वास'' क्या है और इसका अर्थ क्या है। इस कारण उसने विश्वास की प्रकृति पर एक प्रवचन दिया। आइए उसके प्रवचन केा पढ़ते हैं और जानते हैं कि विश्वास की प्रकृति के बारे में पवित्र आत्मा क्या कहना चाहता था।

विश्वास उसे मान लेता है जिसका बोध शारीरिक रूप में नहीं किया जा सकता

विश्वास की प्रकृति के बारे में पहली सच्चाई हमें पता चलती है कि विश्वास उस तथ्य के रूप में मान लेना है, जिसे शारीरिक इन्द्रियों द्वारा अनुभव नहीं किया जा सकता। इब्रानियों 11:1, 2 अध्याय का थीसिस बनाता है: ''अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की इच्छी गवाही की गई।''

कई बार हम इब्रानियों 11:1 को ''विश्वास'' की परिभाषा कह देते हैं। तकनीकी तौर पर वास्तव में यह नहीं है जिसे यह परिभाषा उस शब्द से जिसकी यह परिभाषा देती है सीमित होती है। परन्तु जब किसी ने कहा कि ''विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है,'' तो उसने वह सब नहीं कहा जो ''विश्वास'' के अर्थ के बारे में कहा जाना चाहिए। इसलिए यह आयत ''विश्वास'' की परिभाषा वैसे ही नहीं है जैसे ''परमेश्वर'' की परिभाषा ''परमेश्वर प्रेम है'' नहीं है। परमेश्वर प्रेम है, इस बात में प्रेम उसके स्वभाव की एक विशेषता है; परन्तु वह केवल प्रेम नहीं नहीं है। इसी प्रकार से ''विश्वास'' चाहे उसे स्वीकार करना है जिसे देखा नहीं जा सकता, पर विश्वास केवल इतना ही नहीं है।

तौभी इब्रानियों 11:1 में किया गया दावा इस अध्याय का मुख्य प्वायंट है। विश्वास होने का अर्थ यह है कि यदि कोई अपने इस विश्वास पर काम करता है कि आत्मिक वास्तविकताएं सचमुच में हैं, चाहे अपनी शारीरिक इन्द्रियों से वह उन्हें साबित नहीं कर सकता।

वास्तविक जीवन में इसका क्या अर्थ है? किसी लेखक ने इस प्रकार से कहा है, ''मैं आपको दिखाऊंगा।'' मै ''पुराने ज़माने के लोगों का इस्तेमाल करते हुए, जिन्हें ईश्वरीय स्वीकृति मिली, ईश्वरीय स्वीकृति'' को दिखाता हूं। फिर वह अपनी बाइबल (पुराना नियम) के पृष्ठों को टटोलने लगा और एक के बाद एक विश्वास के बड़े नायकों की ओर हमारा ध्यान में लाने लगा।

विश्वास की प्रकृति का पहला उदाहरण आयत 3 से मिलता है: ''विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।'' संसार कैसे आरम्भ हुआ? हम तो वहां नहीं थे और न ही हमने उसे बनते देखा है; परन्तु हमें विश्वास है कि परमेश्वर ने इसे बनाया। हम तथ्य के रूप में मान लेते हैं कि हमें शारीरिक माध्यमों से पता नहीं चलता, सो ''विश्वास ही से'' हमें समझ आता है कि परमेश्वर ने इसे सृजा। फिर विश्वास की प्रकृति के गवाहों के रूप में हम बाइबल में से उदाहरणों की एक बड़ी सूची को देखते हैं।

विश्वास हमें परमेश्वर को भाने वाले बनाता है

विश्वास की प्रकृति पर दूसरी सच्चाई हमें पता चलती है कि यह हमें परमेश्वर को भाने वाले बनाता है। (पढ़ें इब्रानियों 11:4-7.) पवित्र शास्त्र में जाते हुए लेखक ने उत्पत्ति 4 में से हाबिल के बारे में बताया। फिर उसने हनोक (उत्पत्ति 5) और नूह (उत्पत्ति 6) की बात की। इन सभों के लिए कहा जाता है कि इन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न किया और परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया निष्कर्ष यह है कि उन्हें विश्वास था। ''विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है'' (11:6)। यह आयत हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है! विश्वास की इन दो बातों के बिना हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते: विश्वास करना कि परमेश्वर है और यह विश्वास करना कि परमेश्वर प्रतिफल देता है! मसीही बनने के लिए विश्वास आवश्यक है और मसीही के रूप में जीने के लिए विश्वास आवश्यक है।

विश्वास आज्ञा मानता है

विश्वास की प्रकृति के बारे में तीसरी सच्चाई हमें पता चलती है कि विश्वास आज्ञा का पालन करता है। (पढ़ें इब्रानियों 11:8-12.) अब्राहम को ''विश्वासियों का पिता'' क्यों कहा जाता है? क्योंकि उसने आज्ञा मानी (11:8)! अब्राहम के आज्ञा मानने का सबसे बड़ा उदाहरण शायद 11:17-19 में दोहराया गया है, जो हमे परमेश्वर की आज्ञा पर अपने पुत्र के इसहाक को बलिदान करने को तैयार होता है। कितना बड़ा विश्वास है! हमारा विश्वास उसकी तुलना में कितना है? जैसा कि इस अध्याय में ज़ोर दिया गया है, विश्वास निष्क्रिय नहीं है! यह क्रियाशील है। यह आज्ञाकारी है! ध्यान दें कि विश्वास ने क्या किया:

विश्वास से हाबिल ने बलिदान चढ़ाया ... (आयत 4)।
विश्वास से नूह ने जहाज बनाया ... (आयत 7)।
विश्वास से अब्राहम ने आज्ञा मानी ... (आयत 8)।
विश्वास से अब्राहम ने बलिदान चढ़ाया ... (आयत 17)।
विश्वास से इसहाक ने आशीष दी ... (आयत 20)।
विश्वास से याकूब ने आशीष दी ... (आयत 21)।
विश्वास से मूसा के माता-पिता ने उसे छुपाया ... (आयत 23)।
विश्वास से मूसा ने इनकार किया ... (आयत 24)।
विश्वास से मूसा ने फसह को मनाया ... (आयत 28)।
विश्वास से लोग लाल समुद्र के बीच में से निकल गए ... (आयत 29)।
विश्वास से यरीहो की शहरनाह गिर गई ... (आयत 30)।
विश्वास से राहाब ने जासूसों का स्वागत किया ... (आयत 31)।

क्या आपको विश्वास है? इसका उत्तर आपकी सोच में या आपके व्यवहार में या आपकी भावना में नहीं है, बल्कि आप में ही है! यदि आप परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, यदि आप ऐसे काम करते हैं जैसे आप परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं, तो आपको विश्वास है, नहीं तो आपको विश्वास नहीं है।

विश्वास अन्तिम प्रतिफल की ओर आगे को देखता है

विश्वास की चौथी सच्चाई हमें पता चलती है कि विश्वास वर्तमान परिस्थितियों के आगे अन्तिम प्रतिफल की ओर देखता है। 11:13-22 में ज़ोर इस तथ्य पर है कि विश्वास के नायकों को इस जीवन में अपनी उम्मीद पूरी होते दिखाई नहीं दी। अब्राहम को एक देश देने की प्रतिज्ञा की गई थी पर जीते जी यह उसे कभी नहीं मिला। इसहाक ने याकूब और एसाव पर आशिषें दीं पर उन आशिषों को पूरा होते देखने के लिए जीवित नहीं था। याकूब ने अपने बच्चों को इस उम्मीद से आशीष दी कि वे आशिषें पूरी होंगी! परन्तु उसने इस जीवन में उन आशिषों को पूरा होते नहीं देखा। इस तथ्य से कि उसने कनान में दफ़न किए जाने के निर्देश दिए हैं यूसुफ़ ने स्पष्टतया एक दिन मिसर में से इस्राएल के निकलने की उम्मीद की; परन्तु वह उस उम्मीद के वास्तविकता बनने से बहुत पहले मर गया।

तो ''विश्वास'' क्या है? यह वर्तमान से आगे को और भविष्य में आशा के पूरा होने को देखना है। हमारा मानना है कि यदि हम पुरखाओं के जैसे हैं (आयतें 13-16), तो परमेश्वर हमें वैसे ही आशीष देगा जैसे उसने उन्हें दी। (उन्होंने ''प्रतिज्ञाओं को सच माना''; आयत 17; देखें आयत 33.)

विश्वास हमें समझदारी भरे निर्णय लेने में सहायता करता है

विश्वास की पांचवीं सच्चाई हमें पता चलती है कि विश्वास हमें कठिन निर्णय लेने के समय बेहतरीन को चुनने के योग्य बनाता है। (पढ़ें इब्रानियों 11:23-28.) मूसा के माता-पिता को यह निर्णय लेना था कि फिरौन के घर का भाग बना रहे या गुलामों के साथ मिल जाए। इस्राएलियों

को निर्णय लेना था कि परमेश्वर के दसवीं आपदा भेजने पर अपने दरवाजों और अपने घरों के सरदलों पर लहू छिड़ककर परमेश्वर की अज्ञा मानें या न। फिर उन्हें यह निर्णय लेना था कि परमेश्वर की आज्ञा सुनकर लाल समुद्र में आगे बढ़ें या न। ये निर्णय लेने कठिन थे! परन्तु लोगों ने सही निर्णय लिए! उन्हें अपनी पसन्द चुनने के योग्य किसने बताया? विश्वास ने, प्रतिफल में विश्वास ने! उदाहरण के लिए मूसा ने ''पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने'' से ''परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना'' चुना क्योंकि ''उसकी आंखें फल पाने की ओर लगी'' (11:25, 26)।

कठिन निर्णय लेने के समय आज हमें भी वैसा ही विश्वास होना चाहिए! ''क्या मैं सचमुच मिशनरी के रूप में सेवा कर सकता हूं?''; ''क्या मैं शुद्ध रहकर अनैतिकता से बच सकता हूं''; ''क्या धन से प्रेम करने और सुख की पूजा करने की संसार के प्रलोभन को इनकार करना सम्भव है?'' सही निर्णय लेने के लिए, हम में विश्वास यानी वह विश्वास होना आवश्यक है जो फल की ओर देखता है!

विश्वास हमें जय पाने के योग्य बनाता है

विश्वास की प्रकृति की छठी सच्चाई हमें पता चलती है कि जब हम परमेश्वर पर निर्भर होते हैं तो हम सब रुकावटों पर काबू पा लेते हैं। 11:29-31 में दिए पहले तीन उदाहरण विशेष तौर पर ध्यान देने योग्य हैं। इस्राएली हर उम्मीद के विपरीत मिसर से बच निकले थे। यरीहो की शहरपनाह गिर गई, चाहे (मानवीय तर्क के अनुसार) यरीहो को इस्राएल के आगे गिरना नहीं चाहिए था। एक व्यक्ति अर्थात राहाब ने अपने परिवार के लिए विजय पा ली, क्योंकि उसका मानना था कि परमेश्वर की सहायता से इस्राएली उसके अपने लोगों पर कब्जा पाने के योग्य थे। विजय विश्वास के द्वारा मिलती है, किसी भी बात पर जो बड़ी से बड़ी रुकावटें भी क्यों न हों।

परन्तु विजय हमारी अपनी सामर्थ के द्वारा नहीं मिलती बल्कि यह परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा मिलती है! हमें विश्वास में विश्वास की नहीं बल्कि परमेश्वर में विश्वास की आवश्यकता है! पुराना नियम स्पष्ट कर देता है कि इस्राएल द्वारा प्राप्त की गई विजय परमेश्वर के लोगों की सामर्थ से नहीं बल्कि परमेश्वर की सामर्थ से पाई गई विजय थी!

अगली आयतों में यह विचार जारी रहता है कि विजय विश्वास से मिलता है। (पढ़ें इब्रानियों 11:32-35क।) इस्राएल के इतिहास के शानदार पल उनके उद्धार के लिए परमेश्वर पर इस्राएल के निर्बल होने का परिणाम था!

फिर मूड बदल जाता है। 11:35ख-38 में हमें कोई सांसारिक विजय नहीं मिलती। इन लोगों को विजयी कैसे महसूस कराया जा सकता है? वे विजयी नहीं थे, कम से कम इस जीवन में तो नहीं! परन्तु वे एक-दूसरे जीवन में विजयी थे (या होंगे)! हम पढ़ते हैं,

> विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए पहिले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें (11:39, 40)।

इस से हमें पता चल सकता है कि परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास से विजय इस जीवन में विजय नहीं, परन्तु ये विजय अवश्य है! अन्तिम, महत्वपूर्ण विजय स्वर्ग में है!

सारांश

इब्रानियों 11:39, 40 हमारे युग के महत्व की ओर ध्यान दिलाता है। व्यवस्था के पूरा होने और मसीह के आने के बिना, विश्वास के महान नायक सिद्ध नहीं हो सकते थे। ये आयतें इस विचार का भी सुझाव देती हैं कि हमें पुराने ज़माने के इन बड़े लोगों के साथ परमेश्वर के प्रसिद्ध के घर में स्थान मिलेगा!

अपनी पसन्दों के कारण मूसा वहां होगा, और हो सकता है कि अपनी पसन्दों के कारण आप भी वहां होंगे। अपने आज्ञा मानने के कारण अब्राहम वहां होगा, और शायद अपने आज्ञा मानने के कारण आप भी वहां हों। पुरखे वहां होंगे क्योंकि वे यह न जानते हुए कि उनके लिए आगे क्या रखा है, परमेश्वर की दिशा में निकल पड़े। मुझे यकीन है कि इसी कारण से नायकों के परमेश्वर के हॉल में मिशनरी होंगे। नूह वहां होगा क्योंकि उसने वही किया जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा, उन बातों के विषय में भी जो दिखाई नहीं देती थीं। हो सकता है कि इसी कारण से आप भी वहां होंगे!

परन्तु आप विश्वास के नायकों में होने की उम्मीद तब तक नहीं कर सकते जब तक आप मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर परमेश्वर के पास आने के लिए पहले विश्वास नहीं करते ताकि आपका उद्धार हो जाए! यदि आपने अभी तक आज्ञा नहीं मानी है, तो अभी मान लें!